लहसुन

फसल की उत्पादन तकनीक

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र,
सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

कंदीय फसलों में आलू एवं प्याज के बाद लहसुन एक महत्वपूर्ण फसल हैं। यह नगदी फसल के रूप में मध्यप्रदेश मे रबी मौसम में उगायी जाती है।

जलवायु एवं भूमि :- लहसुन पाले को सह सकने वाली फसल है जो बढवार के समय ठंडा एवं आर्द्र तथा बल्ब की परिवक्ता की स्थिति में सूखा मौसम चाहती है। लहसुन बलुई दोमट से लेकर चिकनी दोमट मिट्टी में उगायी जा सकती है किन्तु अच्छे जल निकास वाली दोमट मिट्टी में लहसुन फसल का उत्पादन अधिक प्राप्त होता है।

उन्नत किस्में

- **एग्रीफाउंड व्हाईट** : इसके कंद ठोस, मध्यम आकार के सफेद तथा अन्दर का रंग बादामी होता है। प्रत्येक कन्द में कलियों की संख्या 20–25 होती है।

- **जी–1** : यह सफेद रंग की बड़े गांठ वाली किस्म है। औसतन एक गांठ में 20–25 कलियाँ होती है। इसकी औसत उपज 150 से 200 क्विंटल प्रति हैक्टर है।

- **जी–50** : इस किस्म की गाँठ ठोस एंव सफेद रंग की होती है। औसत उपज 150 से 155 क्विंटल/हैक्टर है। यह 165 से 170 दिन मे तैयार होती है।

- **जी 282** : यह सफेद रंग एवं बडी कलियों वाली किस्म है। इस किस्म में 15 से18 कलियाँ प्रत्येक गाँठ में पाई जाती है। औसत उपज 150 –160 क्विंटल/हैक्टर है। यह प्रजाति निर्यात हेतु अच्छी मानी गयी है।

♦ जी 323 : इस किस्म की गाँठे ठोस व सफेद रंग की होती है। इसकी औसत उत्पादन 150 से 160 क्विंटल / हैक्टयर होता है।

खेत की तैयारी :– लहसुन का अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिये हल से तीन–चार बार जुताई करके भूमि को अच्छी तरह समतल क्यारियों में बांट देते है उसके उपरान्त बुवाई करते है।

खाद एवं उर्वरक :– अधिक उपज प्राप्त करने के लिये 20–25 टन प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में पूर्णतः पकी हुई गोबर खाद मिलाना चाहिए।

सामान्यतः से 150 किग्रा नत्रजन, 100 किग्रा फास्फोरस एवं 75 किग्रा पोटाश प्रति हैक्ट. की दर से देना चाहिए। इन पोषक तत्वों में नत्रजन की आधी मात्रा तथा शेष उर्वरकों की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के पूर्व खेत में अच्छी तरह मिला देना चाहिए तथा नत्रजन की शेष आधी मात्रा को एक माह बाद खडी फसल में देकर गुडाई कर देनी चाहिए।

बीज दर व बुवाई :– लहसुन की बुवाई कलियों द्वारा की जाती है। बुवाई से पूर्व इन कलियो को गाँठ से अलग कर लिया जाता है। एक हेक्टेयर भूमि के लिये 6 से 7 क्विंटल प्रति हैक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

लहसुन की बुवाई तीन प्रकार से की जाती है।

1. छिडकाव विधि
2. डिबलिंग
3. कूंडो में लगाना।

इनमे से कूडों मे लहसुन लगाना सबसे अच्छा होता है। लहसुन फसल हेतु कतार से कतार की दूरी 15 सेंमी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 7.5 से.मी. रखना चाहिए।

बीजोपचार :– बुवाई के पूर्व कलियों को कार्बेन्डाजिम दवा की 2.5 ग्राम को 1 लीटर पानी में घोल बनाकर 15–20 मिनट तक कलियों को डुबाकर रखें तत्पश्चात बुवाई

करे।

निदाई एवं गुडाई :- पहली गुडाई बुवाई के 25 से 30 दिन बाद करना चाहिए दूसरी गुड़ाई 40–50 दिन में करें। दो निदांई करने से फसल खरपतवारो में मुक्त रहती है।

सिंचाई कार्य :- लहसुन फसल में हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है अतः भूमि के अनुसार भारी भूमि में 10–15 दिन में एवं हल्की भूमि में 8–10 दिन के अन्तराल से सिंचाई करना चाहिए।

प्रमुख कीट व उनका प्रबंधन

थ्रिप्स : यह कीट पौधे की प्रारम्भिक अवस्था से ही पत्तियों का रस चूसता है साथ ही विषाणु जनित रोगों को भी फैलाता है। जिस कारण पौधे की पत्तियॉ मुडकर ऐंठ जाती है।

प्रबंधन : इस कीट का प्रकोप दिखने पर इमिडा क्लोरोप्रिड 17.8 एस.एल. की 60 मिली मात्रा का प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

माइट : इस कीट के कारण पौधों की पत्तियां पूर्णरूप से नही खुल पाती है। पत्तियों के किनारे पर पीलापन आता है व पूरी पत्तियॉ कुकड कर एक दूसरे से लिपट जाती है।

प्रबंधन : इस कीट की रोकथाम हेतु डाइकोफाल कीटनाशक की 200–250 मिली मात्रा का प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें।

प्रमुख रोग व उनका प्रबंधन

पौध गलन : बीज में अंकुर निकलने के तुरंत बाद उसमे सड़न रोग लग जाता है जिससे पौधे जमीन से ऊपर आने से पहले ही मर जाते है। इस रोग के कारण पौधें जमीन

की सतह से लगे हुए स्थान पर सड़न दिखाई पड़ती है जिस कारण पौधा उसी सतह से गिरकर मर जाता है।

प्रबंधन : स्वस्थ्य बीज का चयन करें। बुवाई से पूर्व बीज को थायरम की 3 ग्राम या कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा से प्रति किग्रा बीज को उपचारित करें। रोग के लक्षण दिखने पर कार्बेन्डाजिम की 1 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करें।

बैगनी धब्बा : रोग ग्रस्त भाग पर सफेद भूरे रंग के आँख के आकार के धब्बे बनते है जिनका मध्य भाग बाद में बैंगनी रंग का हो जाता है इसलिए इस रोग को बैगनी धब्बा रोग कहा जाता है।

प्रबंधन : रोग के लक्षण दिखाई पड़ने पर कार्बेन्डाजिम + मैनकोजेब की 2–3 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी घोलकर छिड़काव करें।

झुलसा रोग : यह रोग पत्तियों व बीच के डण्ठलों पर छोटे–छोटे सफेद व हल्के पीले रंग के धब्बें पाये जाते है जो बाद मे एक दूसरे से मिलकर बड़े व भूरे रंग के धब्बों में बदल जाते है ओर अंत में ये गहरे भूरे या काले रंग के हो जाते है।

प्रबंधन : रोग के लक्षण दिखाई पड़ने पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड या कार्बेन्डाजिम + मैनकोजेब की 3 ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

चुरडा रोग : यह विषाणु जनित रोग है। इस रोग के कारण पत्तियॉ कुकड जाती है जिस कारण पौधा भोजन कम बना पाता है फलस्वरूप उत्पादन कम हो जाता है।

प्रबंधन : इस रोग के प्रबंधन हेतु इमिडाक्लोरोप्रिड 17.8 एस.एल. की 150 मिली मात्रा का प्रति हैक्टयर की दर से छिड़काव करें।

खुदाई :– सामान्यतः लहसुन की गाठें 160–170 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। लहसुन की पत्तियां पीली पड़ने लगे या सूखने लगे एवं तने नीचे की ओर झुक जायें उसके बाद लहसुन की खुदाई की जानी चाहिए।

उपज :– अच्छी तरह देखभाल एवं पोषण होने पर लहसुन की उपज लगभग 140–150 क्विंटल प्रति हैक्टेयर प्राप्त हो जाती है।

-: प्रकाशक :-

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला-सीहोर (म.प्र.)

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

सी.आर.डी.ई. कृषि विज्ञान केन्द्र, सेवनियां, जिला–सीहोर (म.प्र.)

फोन – 07561-281834, ई.मेल crdekvksehore@gmail.com